देह के कई रूप अनेक
एक न मिले दुसरे से
पर आत्मा है सबकी एक
रूप रंग में एक समान
आत्मा परमात्मा भी है अलग
पर रुप रंग में दोनो एक
मिट्टी का दीपक है जलाते
अर्थ न उसका फिर जानते
है वो आत्मा ज्योती का प्रतीक
आत्मा परमात्मा है ज्योति बिंदु
अखंड होती ज्योति परमात्मा की
जगाती ज्योत हम आत्माओ की
परमात्मा जन्म मरण से
न्यारा ,रहता हरदम ही पवित्र
आत्मा ने चमक अपनी खोयी
84 जन्म में शक्ति गवाई
ज्ञान से अज्ञान में आई
डिम हो गई चमकती जो थी
पवित्र सुख शांतिअपनी गवाई
दीप से दीप जलाते
दीपावली को मनाते

सच्ची दीपवाली जब होती
आत्मा की ओझाई ज्योति
 परम ज्योति से जब जगतीज्ञान -योग
का घृत जब डालता
घोर अँधेरे से सुजाग हो जाते
ज्ञान सूर्य बन प्रकाश में लाते
पत्थर बुद्धि से पारस बन जाते
पवित्र और योगी बन जाते
सदा काल का भाग्य बनाते
अपने घर लौट उड़ कर फिर जाते

ॐ शांति!!